National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 93-95
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

फरीदा उक्कली
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर

मार्गदर्शिका
प्रो.श्रीमती राजू. बागलकोट
अध्यक्ष. एवं. डीन , हिन्दी विभाग, ,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर

Correspondence:
फरीदा उक्कली
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय,विजयपुर

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष

फरीदा उक्कली, प्रो.श्रीमती राजू. बागलकोट

शोध सार: समकालीन हिन्दी लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा एक सशक्त लेखिका है, जिसने समाज की सोच पर, नारी की श्रेष्टता पर, उससे जुड़े सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इनके सारे उपन्यास स्त्री मन से जुड़े हुए है। लिंग भेद, जाति आधारित शोषण, पारिवारिक समस्याएँ, सामाजिक समस्याएँ, राजनीतिक समस्याओं पर आधारित है। जैसे की अल्मा कबूतरी में अल्मा, इदन्नमम में मंदाकिनी, झूला नट की शीलों, बेतवा बहती रही की उर्वशी, अखनपाखी की भुवनमोहिनी और कई इसुरी फाग की रजऊ, विजन की डॉ. नेहा, डॉ आभा इस तरह सभी उपन्यास पात्र नारी की प्रतिभा पर प्रकाश डालनेवाले है।

कुंजी शब्द: मुद्दा, भ्रष्टाचार, आधार, चिकित्सा

भूमिका: श्रेष्ट लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य को स्त्री के लिए समर्पित किया है। वे स्त्री के साथ हो रहे पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में हो रहे अत्याचार-अनाचारों का खुलकर विरोध किया। अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री जाति को न्याय दिलाने का प्रयास किया है। इस तरह इनके कई उपन्यास स्त्री की समस्याओं को लेकर ही लिखे गए है। समकालीन हिन्दी लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा एक सशक्त लेखिका है। जिसने समाज की सोच पर, नारी की श्रेष्टता पर, उससे जुड़े सामाजिक मुद्दों को अपने उपन्यासों में जगह दी है। हिंदी उपन्यास परंपरा में स्त्री जीवन की समस्याएँ, संवेदनाएँ और संघर्ष सदैव से महत्वपूर्ण विमर्श का विषय रहे हैं। समाज की संरचनात्मक विसंगतियों, पितृसत्तात्मक मूल्यों और लैंगिक असमानताओं के बीच स्त्री जिस प्रकार अपने अस्तित्व, अधिकारों और पहचान के लिए संघर्ष करती है, वह आधुनिक साहित्य में विशेष रूप से उभरकर सामने आया है। हिंदी कथा-साहित्य में कई लेखकों ने स्त्री के विविध रूपों और संघर्षों को अभिव्यक्त किया है, जिनमें मैरी पुष्पा का स्थान अत्यंत उल्लेखनीय है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास स्त्री के दैनंदिन जीवन, उसके मनोवैज्ञानिक द्वंद्व, पारिवारिक दायित्वों, सामाजिक बंधनों तथा आर्थिक-सांस्कृतिक दबावों को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री मात्र भावनाओं की प्रतीक नहीं, बल्कि संघर्षशील, चेतनशील और आत्मनिर्णय की आकांक्षा रखने वाली सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरती है। वे समाज में व्याप्त दंश, शोषण, उपेक्षा तथा स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं को यथार्थवादी दृष्टि से चित्रित करती हैं। वर्तमान भारतीय समाज में स्त्री-जीवन अनेक स्तरों पर संघर्षरत है—परिवार और समाज की रूढ़ियाँ, आर्थिक निर्भरता और अवसरों का अभाव शिक्षा, स्वतंत्रता और अपने निर्णयों पर नियंत्रण की कमीसामाजिक मान-अपमान और नैतिक दबावलैंगिक भेदभाव और पितृसत्तात्मक मूल्य ,मैत्रेयी पुष्पा इन सभी पहलुओं को अपने उपन्यासों में बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करती हैं। उनके पात्र जीवन के यथार्थ से टकराते हैं, अपने

भीतर और बाहर की चुनौतियों से जूझते हैं और अपने अस्तित्व को सार्थक करने का प्रयास करते हैं। यही संघर्ष उनके साहित्य का मुख्य स्वर बन जाता है।

इस शोध का उद्देश्य मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में प्रस्तुत स्त्री-जीवन के इन विविध सामाजिक संघर्षों का विश्लेषण करते हुए यह समझना है कि उनके साहित्य में स्त्री अपनी अस्मिता, अधिकारों और आत्मनिर्भरता की खोज किस प्रकार करती है। साथ ही, यह अध्ययन इस बात की भी पड़ताल करेगा कि मैत्रेयी पुष्पा किस सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री-जीवन को व्याख्यायित करती हैं और उनके उपन्यास वर्तमान समाज के स्त्री-विमर्श को किस प्रकार समृद्ध करते हैं।

विश्लेषण: मैत्रेयी पुष्पा का श्रेष्ठ उपन्यास अल्मा कबुतरी, जिसमें आदिवसी और उच्च वर्ग के द्वन्द्व का चित्रण है। आदिवासियों का जीवन संघर्ष, उनका दरबदर भटकना, पीड़ा, ऐसे कई समस्याओं को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में दो भिन्न समाज है। एक तो कबुतरा समाज, दूसरा कज्जा समाज। इनके जाति के बीच होनेवाले संघर्ष, स्त्री की समस्या, पीड़ा को बड़े मार्मिक रुप से चित्रित किया गया है। एसे कई समाज है, जातियाँ है जो शोषण से स्वतंत्र नहीं हो पाई। इन आदिवासियों को समाज ने चोर घोषित कर उन्हें घर, समाज से बेघर रखा। समाज ने उन्हें तुच्छ मानते। उच्च वर्ग और पुलिसवालों ने उन्हें पीड़ित करना और प्रताड़ित करने का एक मौका नहीं छोड़ा। देश को आजादी तो मिल गई पर, निम्न जाति के लोगों को उनका अधिकार नहीं मिल पाया। ना जीवन बसर करने का जरिया, तो ऐसे हालत में वे चोरी-चकारी, डकैती के तरफ गलत राह पर निकलने के लिए मजबूर हो गए। अल्मा एसे समाज का विरोध करती है। आजादी के इतने सालों बाद भी इन जनजातियों को सम्मान नहीं मिल पाया।

एसे उपन्यासों के माध्यम से लेखिका नारी की संयम शक्ति, उसकी सहनशीलता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। जो अल्मा कई बार शोषित हुई, शोषित हुई फिर भी उसने हार नहीं मानकर संयम बनाए रखा। तभी जाकर वे विधान सभा में अपना स्थान बना पाई। उपन्यास में मंसाराम और कदमबाई दो प्रमुख पात्र है। इस उपन्यास में मंसाराम का प्रेम कदमबाई की तरफ स्वार्थ न होकर एक मानवीय भावना से युक्त है। यह कहानी सिर्फ इनकी न होकर निर्बलों पर बलवानों की जीत का है। जो नारी को शोषित कर उन्हें समाज में जीवन व्यापन करने नहीं देता। संसाराम के पिता एक अमीर आदमी थे। जमीनदार थे। जिनकी पचास बिघे की जमीन थी। जिनमें दो बिधे मील पर कबुतरा लोग रहते थे। आधा बिधा गंदगी मचाकर और दारू का विषैली पानी बहाकर बरबाद कर दिया था। किसी भी तरह इस जमीन से इन कबुतराओं को हटाना चाहते थे, पर वे नहीं हटते वहीं रह जाते हैं। संसाराम के पिता संसाराम से कहते हैं-"मैं झीक रहा हूँ। साले कबुतरा पूरा डेढ़ बीघा दाबे हुए हैं। आधा बीघा हगमूलकर बरबाद करते हैं। कसर रह जाती है सो दारू का विषैला पानी बहाकर पूरी कर देते हैं। दो बीघे मतलब बत्तीस मन गेहूँ मंडी में बेचो तो हजारों रुपए घर में रखो वो पूरी साल का अन्न।"[1]

कदमबाई के गर्भ से राणा नाम का बीज जन्म लेता है जो शोषण के तहत पनपा था। राणा कदमबाई के लिए समस्या बन जाता है। कज्जा जाति के लक्षण उसमें दिखाई देने लगते हैं। जैसे भी हो खुन तो रंग लाता ही है। सो पिता के लक्षण राणा में दिखाई देने लगे। इस तरह से प्रतिदिन राणा का मन सिर्फ पढ़ाई लिखाई में कज्जा समाज की ओर खींचने लगा। भूरी अपने बेटे मंसाराम को पढ़ाने के लिए अपने देह का व्यापार करना भी गलत नहीं लगा। अल्मा आदिवासी रामसिंह की समझ्दार बेटी थी। पर रामसिंह भूल गया था कि अपनी बेटी भी कबुतरा है, क्या पुलीसवाले उसे छोड़ देंगे सभी उसे नोचकर खा जाएंगे। राणा कहता है- "रामसिंह काका दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा है उस ओर, बच जाएगा? अल्मा नहीं बचेगी यह शर्तिया बात है। मोधिय गुरु रुखरी की जड़ी बूटी की पहचान ही नहीं रखता, आदमी को भीतर-बाहर से देख लेता है।"[2] अल्मा जहाँ पनाह लिया था वह एक बड़े नेता श्रीराम शास्त्री कल्याण मंत्री का घर था। इसी सर्वेन्ट क्वार्टर में संतौले अपनी पत्नी के साथ रहता था।

संतौले की बहु अल्मा को मंत्री को खुश करने के लिए कहती है पर अल्मा नहीं मानती फिर भी किसी तरह समझा-बुझाकर अल्मा को शास्त्री के कमरे में भेजा जाता है। पर शास्त्री उसे छूता तक नहीं क्योंकि, शास्त्री को अल्मा के साथ जोर जबरदस्ती नहीं करनी थी। और सभी लोग पैसों के लिए ऐसा काम करते है पर अल्मा को किसी चीज की लालसा नहीं थी सो उसे श्रीराम शास्त्री बक्ष देता है। शास्त्री सतोंले की बहु से कहता है। इस तरह से मजबूरन लोग अपने हालतों के वशीभूत अपनी बेटियों, औरतों, जमीनदारों, पैसेवालों के हवालें कर देते हैं। सुरजभान एक राक्षस था। ऐसे लोग नारी को कभी जीने नहीं देंगे। नाही कबुतरा समाज का विकास होने देंगे।

इसी तरह मैत्रेयी पुष्पा का एक और श्रेष्ट उपन्यास चाक जिसमें स्त्री की पीड़ा को सजीव रूप से अनुभव कर पाएंगे। इस उपन्यास की नायकी सारंग जो संघर्ष का प्रतीक है। और कई पात्र है जैसे रेशम, गुलकंदी, हरिपप्यारी, शारदा, रुक्मिणी, रमादेई, नारायणी, यह सभी पात्र पुरुष से, समाज से शोषित होकर, सद्गति प्राप्त कर लिया था। इस पुरुषप्रधान समाज में नारी केवल भोग की वस्तु बनकर रह गई है। पर सारंग इस पुरुष प्रधान समाज का विरोध करती है। स्त्री के अस्तित्व को कायम रखने के लिए वे आखरी समय तक लड़ती है।

बेतवा बहती रही उपन्यास की नायकी उर्वशी तो अपने परिवार के हाथों ही ठगी गई है। गरीब परिवार में आज भी बेटियाँ बोझ हैं, उस बोझ को उतारने के लिए बेटियों को नरपशु के हवाले कर देते है।

एसा ही नर पशु बरजोर सिंह था। उर्वशी के दुगने उम्रवाला जिसे उर्वशी के भाई अजीत नें बेच दिया था। वे हर हालातों को झेल कर मरते दम तक अपने कर्तव्य का पालन करती है, पर आखिर में उसे उसके पति द्वारा ही धीमें जहर से मौत मिलती है।

इसी तरह मैत्रेयी पुष्पा का नारी संघर्ष केंद्रित उपन्यास अगनपाखी। इस उपन्यास की नायकी भुवनमोहिनी। जो चंदर के प्रेम में धोका का जाती है। चंदर को नौकरी लगती है और वे भुवन को त्यागकर शहर चला जाता है। और भुवन को नामर्द विजय को सौंप दिया जाता है। उसके हक की सारी संपत्ती को हड़पना चाहते थे। पर वे हार नहीं मानती अपने हिस्से की संपत्ति को हासिल कर लेती है। "नादान मोही! अपने घर की अमानत तो बेटाहोता है। बेटी और बेटी के पुत कैसे अपने हुए? कहावत है न कि पुत्र को पूत करेज कौ टूक। धिये को पूत हरामी कौ सूत।"[3]

समाज में कई क्षेत्र होते है, उसमे चिकित्सा क्षेत्र सबसे महत्वपूर्ण है। जिसमें व्यक्ति को जीवन दान मिलाता है। उसी चिकित्सा क्षेत्र में होनेवाले भ्रष्टाचार का खुलासा मैत्रेयी पुष्पा करना चाहती है। 'विजन' उपन्यास में आभा, नेहा और नेहा की माँ तीन पात्र है। लोंगो का मानना है कि शहरी स्त्री स्वतंत्र होती है। खुद अपने फैसले लेती है। पर यह सरासर गलत है। नारी शहरी हो या ग्रामीण वे समाज के रीति-रिवाजों के सामने झुकना ही पड़ता है। इस समाज के खातिर ही नेहा, माता-पिता के सामने विवश हो जाती है। नेहा एक नेत्र चिकित्सक थी। जिसने अपनीं प्रतिभा से समाज में अपना नाम बनाया था, खुद की पहचान बनायीं थी। नेहा का रिश्ता एक श्रेष्ट परिवारवाले से जुड़ तो जाता है, पर नेहा परिवार के लिए एक जीतकर लाया हुआ पदक मात्र बनकर रह जाती है। धीरे-धीरे नेहा का जीवन अंधकार में ढलते जाता है। अजय सिर्फ अपने पद प्रतिष्टा, अस्पताल के फायदे के लिए नेहा से विवाह किया था। इस विवाह से नेहा का उज्वल जीवन अन्धकार से घिर जाता है। माँ से नेहा ने कितनी मिन्नते की थी, विवाह से इनकार भी किया था। नेहा का मानना था कि अजय डोनेशन देकर डिग्री हासिल की है। उसे एक ईमानदार सच्चे जीवन साथी की तलाश थी, पर नेहा की माँ समाज की दुहाई और उसके उज्वल भविष्य के सपने दिखाकर विवाह के लिए राजी कर लेती है और नेहा के पिता, नेहा से कहते_"ठीक है, कॉलिज के साथ पैसेवाली बात जुडी सही, लेकिन उसकी सनद देखेगा कौन? उसे नौकरी के लिए यहाँ-वहाँ तो भटकना नहीं सो एप्लीकेशन देता फिरे। नेहा इतना जान ले कि अमीरों से जवाब-तलब करने का दमखम सरकारी कानूनों में भी नहीं।"[4] माँ-पिता के इस तर्क से नेहा आवक रह जाती है। क्यों उसे ही समाज विवश कर देता है। माना की विवाह एक पवित्र बंधन है। पर विवाह में सिर्फ दो परिवार नहीं दो दिलों का उनके विचारों का मिलना भी जरूरी होता है।

इसी तरह मैत्रेयी पुष्पा का एक और उपन्यास गुनाह-बेगुनाह जिसमें रक्षक ही बक्षक बन गए है। समीना, सुरिंदर खौर, रेशमी, शारदा एवं इला चौधरी, आदि नारी पात्र बेगुनाह होकर भी गुनहार साबित कर दिए गए थे। रक्षकों द्वारा ही अत्याचार का शिकार हुए। एसे कई क्षेत्र हैं, जहाँ स्त्री अपने अस्तित्व को खोकर सिर्फ एक बुरी घटना बन कर रह जाती है। एक जगह जयंत समीना से कहता है। "औरत तभीतक कोमल और कमजोर रहती है, जबतक पुरुष अपनी छाया के साथ उसके आस पास होता है। उसको अकेले मत छोड़ो। अकेली औरत रिबेल हो जाती है और इतनी ताकतवर बनकर मैदान में उतरती है कि उसको जितना अच्छे- अच्छों के बस का नहीं।"[5]

निष्कर्ष: इस तरह से लेखिका ने अपने उपन्यासोंन के माध्यम से आदिवासियों की पीडा, उनकी समस्या, नारी शोषण, मजबूर माँ, शिक्षा समस्या, बेरोजगारी की समस्या, नारी व्यापार आदि समस्याओं को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। समाज में पुरुष ही पुरुष का शोषण कर रहा है। तो स्त्री इस शोषण से कैसे वंचित रह सकती है। समाज की रक्षा कौन करेगा जब रक्षक ही बक्षक बन जाए। क्या कभी इन विचारों को बदला जा सकता है। पर अल्मा, उर्वशी, भुवन, डॉ नेहा, आभा, भुवन मोहिनी, जैसे आदि पत्रों के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा सामाजिक बदलाव को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। स्त्री संयम, सहनशीलता, परिवर्तित नारी, अस्मिता को खोजती नारी, अत्याचार का विद्रोह करती नारी को उसके परिवर्तन रूप को अपने उपन्यास का पात्र बनाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1) मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबुतरी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं-10
2) मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबुतरी- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली– पृ. सं– 194
3) मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, वाणी प्रकाशन 2014, पृ.सं-21
4) मैत्रेयी पुष्पा, विजन उपन्यास, वाणी प्रकाशन-2002, पृ.स-71
5) मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह-बेगुनाह, राजकमल प्रकाशन-2019, पृ.सं-242